लेव तोलस्तोय
तीन
भालू

लेव तोलस्तोय

तीन भालू

चित्रकार:

यूरी वस्नेत्सोव

रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

एक बच्ची अपने घर से जंगल की तरफ़ गई। जंगल में वह रास्ता भूल गई और घर की सड़क ढूंढ़ने लगी। लेकिन उसे रास्ता नहीं मिला और वह जंगल में एक छोटे से मकान की तरफ़ चली।
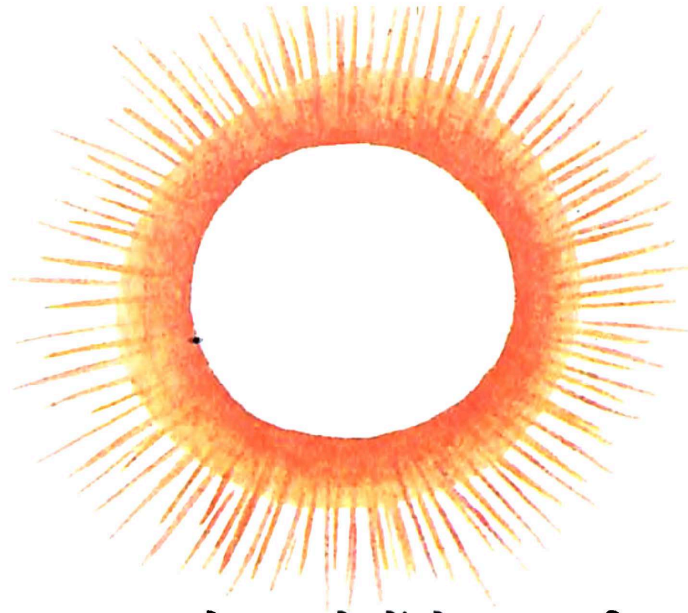
दरवाज़ा खुला था। उसने दरवाज़े में से अन्दर की तरफ़ झांका। देखती क्या है कि उस छोटे से मकान में कोई भी नहीं है। वह अन्दर चली गई। इस छोटे से मकान में तीन भालू रहते थे। एक भालू बाप था और उसका नाम था मिख़ाईल इवानोविच। वह बहुत बड़ा और झबरा सा था। दूसरी उसकी बीवी थी। वह उससे ज़रा छोटी थी और उसका नाम था नास्तास्या पेत्रोवना। तीसरा भालू बच्चा था। वह छोटा सा था और उसका नाम था मीशूत्का। वे तीनों भालू घर पर नहीं थे, जंगल की सैर के लिए गये हुए थे।

इस छोटे मकान में दो कमरे थे। एक खाने का कमरा था, दूसरा सोने का कमरा था। बच्ची खाने के कमरे गई। वहां उसने देखा कि मेज़ पर तीन प्याले रखे

हैं और उनमें शोरबा भरा हुआ है। पहला प्याला, जो बहुत बड़ा था, मिख़ाईल इवानोविच का था। दूसरा प्याला, जो उससे ज़रा छोटा था, नास्तास्या पेत्रोवना का था। और तीसरा नीले रंग का छोटा सा प्याला मीशूत्का का था। हर प्याले के पास एक-एक चम्मच रखा था—बड़ा, बीच का और छोटा।

बच्ची ने सबसे बड़ा चम्मच उठाया और सबसे बड़े प्याले में से शोरबा लिया। फिर उसने बीच का चम्मच उठाया और बीच के प्याले में से शोरबा लिया। और सबसे छोटा चम्मच उठाया और छोटे नीले प्याले में से शोरबा लिया। मीशूत्का का शोरबा उसे सबसे ज़्यादा पसन्द आया।

अब बच्ची बैठना चाहती थी। उसने देखा कि मेज़ के पास तीन कुर्सियां रखी हैं। एक बहुत बड़ी मिखाईल इवानोविच की थी। दूसरी उससे कुछ छोटी, नास्तास्या पेत्रोवना की थी। और तीसरी सबसे छोटी नीले गद्दे वाली कुर्सी मीशूत्का की थी। वह सबसे बड़ी कुर्सी पर चढ़ने लगी और गिर पड़ी। फिर वह बीच की कुर्सी पर बैठी। वहां वह बेआराम सी थी। इसके बाद वह नन्ही-मुन्नी कुर्सी पर बैठी और हंसने लगी—वहां बहुत ही मज़ा आ रहा था। उसने नीले प्याले को अपने घुटने पर रख लिया और शोरबा खाना शुरू कर दिया। वह सारा शोरबा खा गई और कुर्सी में झूलने लगी।

छोटी कुर्सी टूट गई और बच्ची ज़मीन पर गिर पड़ी। फिर वह उठ कर खड़ी हुई, कुर्सी को उठाया और दूसरे कमरे में चली गई। वहां तीन पलंग बिछे हुए थे। एक सबसे बड़ा मिख़ाईल इवानोविच का था, दूसरा बीच का नास्तास्या पेत्रोवना का था और तीसरा सबसे छोटा मीशूत्का का था। बच्ची पहले सबसे बड़े पलंग पर लेटी—वह बहुत ही लम्बा-चौड़ा था। फिर वह बीच के पलंग पर लेटी—वह ऊंचा बहुत था। फिर वह सबसे छोटे पलंग पर लेटी। वह उसके लिए बिलकुल ठीक था। और वह वहां लेट कर सो गई।

भालू बहुत भूखे घर लौटे और खाना खाना चाहा। सबसे बड़े भालू ने अपना

प्याला उठाया। उसपर एक नज़र डाली और बहुत ही ख़ौफ़नाक आवाज़ में गुर्राया :

"मेरे प्याले में से किसने खाया?"

नास्तास्या पेत्रोवना ने अपने प्याले को देखा और वह भी गुर्राई — मगर इतने ज़ोर से नहीं :

"मेरे प्याले में से किसने खाया?"

और मीशूत्का ने अपने खाली प्याले पर निगाह दौड़ाई और बारीक सी आवाज़ में चिल्लाया :

"मेरे प्याले में से किसने खाया और सब कुछ खा लिया?"

मिखाईल इवानोविच ने अपनी कुर्सी पर नज़र डाली और बहुत ख़ौफ़नाक आवाज़ में गुर्राया :

"मेरी कुर्सी पर कौन बैठा और किसने उसे जगह से बेजगह किया?"

नास्तास्या पेत्रोवना ने अपनी कुर्सी पर नज़र डाली और वह भी गुर्राई — मगर इतने ज़ोर से नहीं :

"मेरी कुर्सी पर कौन बैठा और किसने उसे जगह से बेजगह किया?"

मीशूत्का ने अपनी नन्ही-मुन्नी टूटी हुई कुर्सी पर नज़र डाली और बारीक सी आवाज़ में चिल्लाया :

"मेरी कुर्सी पर कौन बैठा और किसने उसे तोड़ा?"

तीनों भालू दूसरे कमरे में गये।
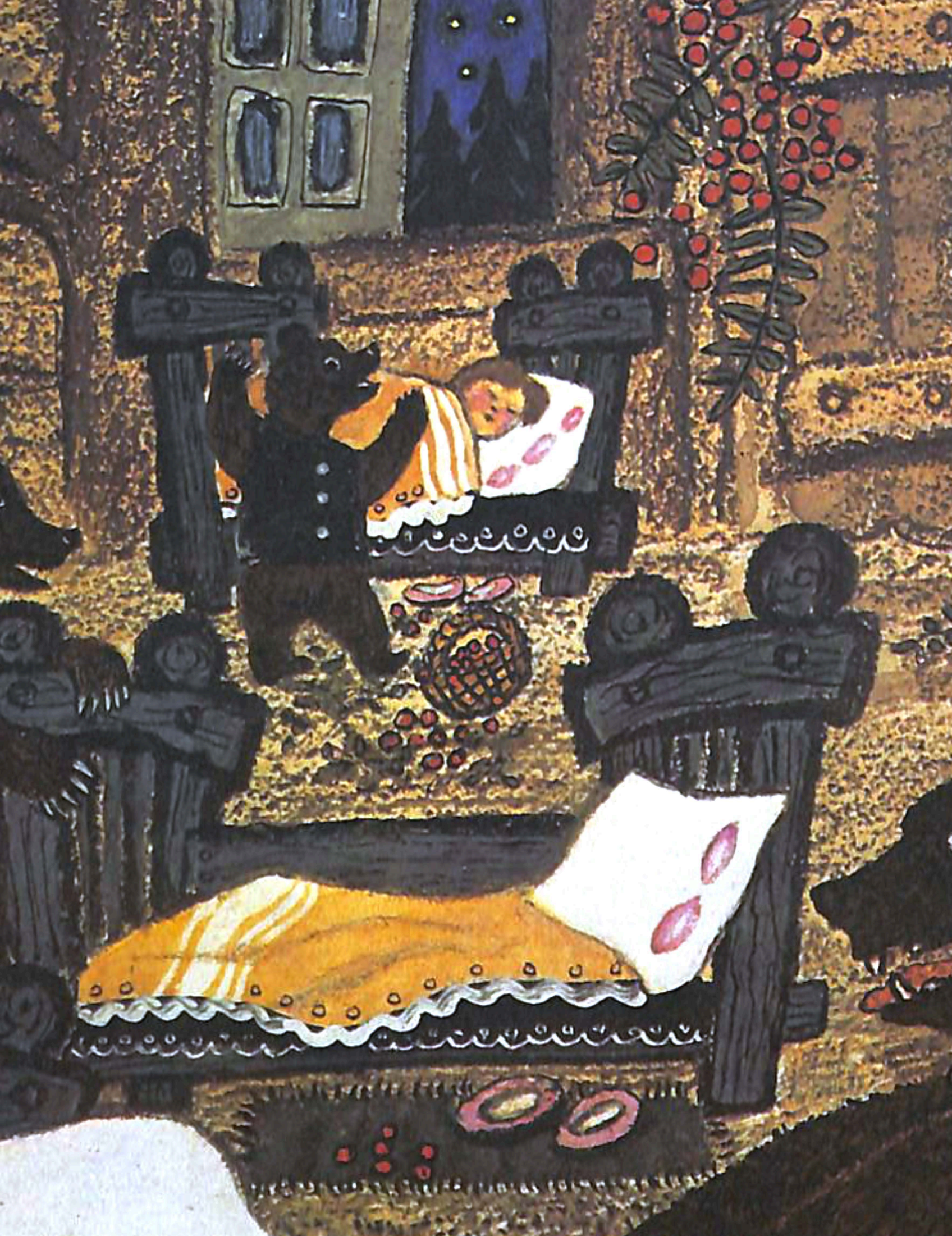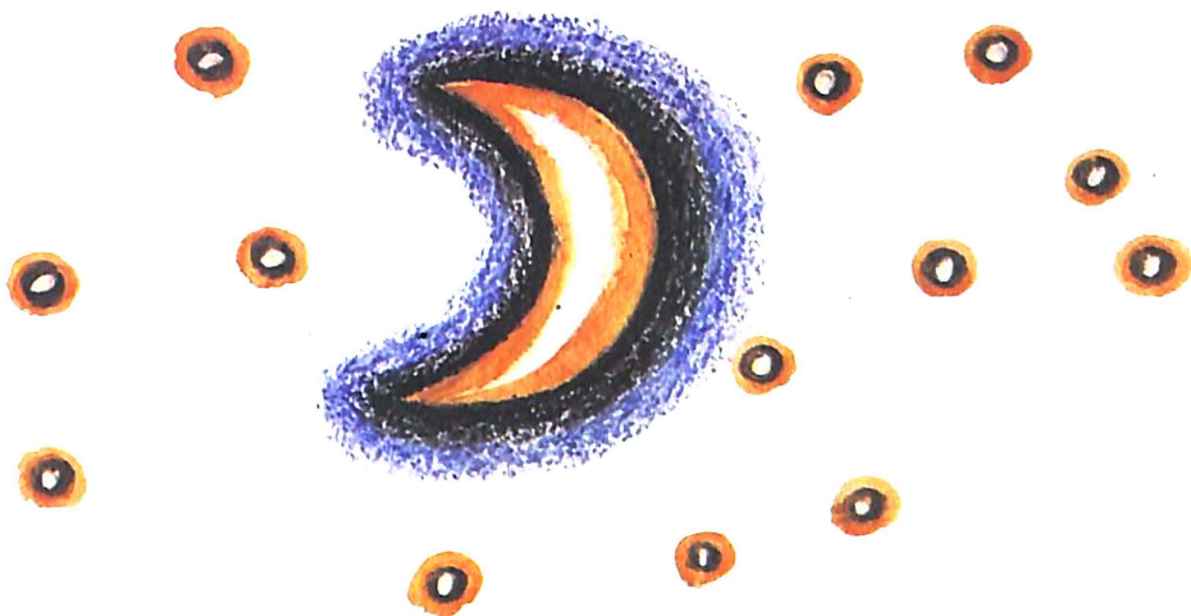
मिख़ाईल इवानोविच बहुत ख़ौफ़नाक आवाज़ में गुर्राया:

“मेरे बिस्तर पर कौन लेटा और किसने उसे ख़राब किया?”

नास्तास्या पेत्रोवना भी गुर्राई—मगर इतने ज़ोर से नहीं:

“मेरे बिस्तर पर कौन लेटा और किसने उसे ख़राब किया?”

और मीशूत्का एक तिपाई पर चढ़ कर अपने पलंग तक पहुंचा और बारीक सी आवाज़ में चिल्लाया:

“मेरे बिस्तर पर कौन लेटा?..”

और एकदम उसकी नज़र बच्ची पर पड़ी और वह इस बुरी तरह चीख़ा जैसे कोई उसको मारे डाल रहा हो:

“यह रही वह! लेना, पकड़ना! यह रही वह! लेना, पकड़ना!”

वह बच्ची को फाड़ खाना चाहता था। बच्ची ने आंखें खोलीं, भालुओं को देखा और खिड़की की ओर लपकी। खिड़की खुली थी। वह खिड़की से बाहर कूद गई और भागने लगी। और भालू उसको नहीं पकड़ सके।